बी.ए. द्वितीय वर्ष
आगम विद्या एवं प्राकृत साहित्य
प्रथम पत्र–प्राकृत व्याकरण एवं रचना

नोट– निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Answer any three questions of the following.

1. रूप सिद्ध करें (कोई पांच)
   अमुणो, अयम्मि, दोण्हं, चउण्हं, पिआ, सुप्पणहा, रमउं, पुरिल्लो।

2. सूत्र पूर्ति करते हुए सोदाहरण अर्थ लिखें–(कोई पांच)
   1. अतः .....जसः। 2. स्वार्थे..... ।
   3. .....षष्ठी। 4. प्रावृट्..... ।
   5. गणाद्याः ..... । 6. .....ह मो।
   7. मध्ये च..... ।
3. स्त्रीप्रत्ययप्रकरण की मूल विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
4. कारक प्रकरण अथवा तद्धित प्रकरण को विस्तार से समझाइये।
5. भगवंत अथवा देव के रूप लिखिए।
6. निम्न शब्दों के प्राकृत रूप लिखें–
   श्रोस्यामि, नयन्ति, श्लाघते, भुङक्ते, निषेधति, वेपते, गुप्यति, आक्रमते, आगच्छति, पचति।
7. निम्न शब्दों के संस्कृत रूप लिखें–
   पूसइ, थाणं, पुच्छइ, घडइ, रूणद्धि, सुवइ, लिम्पइ, नवइ, भुमइ, पदअइ।
8. निम्न आदेश किन धातुओं को होता है । ससूत्र समझाइए–
   ओहइ, विढवइ, बुक्कइ, पलोट्टइ, छड्डइ,
9. स्त्रीप्रत्ययप्रकरण अथवा कारक प्रकरण को समझाइये।।
10. तद्धित प्रकरण को विस्तार से समझायें।
11. देव तथा राया के रूप लिखें।
12. निम्न शब्दों के प्राकृत रूप लिखें–
    उपसर्पति, समाप्नोति, प्रदीप्यते, रुणद्धि, घटति, खिद्यते, पचति, प्रसरति, आच्छिनत्ति।

13. निम्न शब्दों के संस्कृत रूप लिखें ।
    जूरइ, जुज्झइ, निव्वलइ, मुरइ, झंखइ, उम्मत्थइ, अब्भिडइ, पदअइ, अइच्छइ।

बी.ए. द्वितीय वर्ष
आगम विद्या एवं प्राकृत साहित्य
द्वितीय पत्र–अर्द्धमागधी आगम एवं प्राकृत कथा साहित्य

नोट– निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Answer any three questions of the following.

1. "कस्सेसा भज्जा" नामक पाठ में चारों वरों के पारस्परिक विवाद को किसने शान्त किया और कैसे, स्पष्ट कीजिए।
2. "विउसीए पुत्तबहुए कहाणगं" पाठ का सारांश अपनी भाषा में लिखिए।
3. "गेहेसूरो" नामक पाठ का कथानक लिखते हुए कथा तत्त्वों के सन्दर्भ में इसकी समीक्षा कीजिए।
4. निम्नांकित किन्हीं तीन गद्यांशों का सप्रसंग अनुवाद कीजिए–
   (क) तओ ते सविभवाणुरूवेणं.....आपुच्छिऊण गया नियगनयरं। ('भारि या सीलपरिक्कखा' से उद्धृत)
   (ख) एग पहरंमि गए सो.....कुमारमंतिस्स बुद्धिं पसंसन्ति। ('कुमारमंत्तिस्स दंडविहि' से उद्धृत)
   (ग) एवं सोच्चा उज्जमवाइपंडिओ .....उज्जमो फलं दाही? ('उज्जममेव फलदाणे पमाणेइ' से उद्धृत)
   (घ) सुभद्दा (दीर्घनिःश्वस्य सखेदमात्मगतम्) .....सराणं विणोदलक्खी करेसि। ('सुभद्दापत्तलेहणं' से उद्धृत)
5. छक्खंडागम लेहण–कहा को विस्तार से बताइए।
6. "चोरक्कविसए दुण्हं विउसाणं कहा" का कथानक बताते हुए स्पष्ट कीजिए कि विद्वान किस प्रकार दूसरों के लिए उपयोगी होते हैं।
7. नल के चरित्र को स्पष्ट करते हुए यह बताइए कि नल द्वारा दमयंती को छोड़ा जाना क्या औचित्यपूर्ण था?
8. द्रुमपत्रक नामक अध्ययन का परिचय दीजिए तथा इस अध्ययन के आधार पर वान्त भोगों को पुनः स्वीकार न करने की शिक्षा को व्याख्यायित कीजिए।
9. 'बंभचेरसमाहिठाणं' नामक पाठ की समीक्षा निम्न बिन्दुओं के आधार पर कीजिए।
   (अ) नामकरण की सार्थकता (ब) भाषा (स) ब्रह्मचर्य समाधि स्थान
10. निम्नांकित किन्हीं 5 शब्दों के हिन्दी अर्थ लिखिए–
    पंडुयए संखाइयं, मिच्छत्तनिसेवए, अण्णवं, गुत्तिंदिए, केवलिपण्णन्ताओं, निग्गंथे, हवेज्जा।
11. "सिप्पिपुत्तस्स कहा" नामक पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि छात्र जीवन के लिए यह एक प्रेरणादायी कथा है।
12. "रमणीए पराभूअ–सिकन्दरस्स कहा" नामक पाठ के आलोक में कथा का उद्देश्य एवं सिकन्दर के चरित्र की विशेषताएं लिखिए।
13. "पंचसालिकणाणं सत्ति" पाठ का कथानक लिखते हुए कथा तत्त्वों के संदर्भ में इसकी समीक्षा कीजिए।
14. निम्नांकित किन्हीं दो गाथाओं का सप्रसंग अनुवाद कीजिए–

(क) लद्धूण वि माणुसत्तणं, आरिअं पुणरावि दुल्लहं।
बहवे दसुया मिलेक्खुया, समयं गोयम! मा पमायए।।

(ख) धम्मं पि हु सद्दहंतया दुल्लहया काएण फासया।
इह कामगुणेहि मुच्छिया, समयं गोयम! मा पमायए।।

(ग) धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइमं धम्मसारही।
धम्मारामरए दंते बंभचेरसमाहिए।।

15. निम्नांकित गाथा की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

एस धम्मे धुवे निअए, सासए जिणदेसिए।
सिद्धा सिज्झंति चाणेण, सिज्झिस्संति तहापरे।।

अथवा

अकलेवरसेणिमुस्सिया, सिद्धिं गोयम! लोयं गच्छसि।
खेमं च सिवं अणुत्तरं समयं गोयम! मा पमायए।।

16. द्रुमपत्रक नामक अध्ययन को निम्नांकित बिन्दुओं के आलोक में समझाइए–
   (अ) जीवन की अस्थिरता (ब) मनुष्य भव की दुर्लभता
   (स) शरीरबल की क्षीणता (द) भोगों का त्याग

अथवा

ब्रह्मचर्य को परिभाषित करते हुए शीलविराधना के 10 कारणों की समीक्षा कीजिए।

17. निम्नांकित किन्हीं 5 शब्दों के हिन्दी अर्थ लिखिए–
    मणपल्हायजणणिं, थीकहं, सोयगिज्झं, आयरियाह, संखिज्जसन्नियं, सद्दहणा, उक्कोस